हंस और कछुए की पंचतंत्र कहानी

बड़े से जंगल के बीच में एक छोटा सा तालाब था। उस तालाब में ढेरों जानवर रहते थे और बहुत से जानवर वहां पानी पीने आते थे। उस तालाब में एक कछुआ भी था जो बेवजह बातें किया करता था। वह कछुआ बहुत बातें करता था और बिना मतलब के कुछ भी बोलता था। उसके इस आदत से सारे लोग उससे परेशान रहते थे।

उस कछुए के दो अच्छे दोस्त भी थे जो उसका बहुत ख्याल रखते थे और उसके बारे में सोचते थे। वे दोनों दोस्त हंस थे। दोनों हंस और कछुआ तीनों बहुत अच्छे दोस्त थे।

कुछ दिनों बाद गर्मी आ गई गर्मी की वजह से तालाब का पानी सूखने लगा। इसकी वजह से तालाब के सारे जानवर चिंतित हो गए। ऐसे में दोनों हंसो को अपने दोस्त कछुए की चिंता सताने लगी।

वे दोनों हंस कछुए के पास गए और उसे बोले की उसे यह तालाब छोड़कर किसी अन्य तालाब में जाना चाहिए ताकि वहां जाकर कछुआ बड़े आराम से रह सके। यह सुनकर कछुए ने उनसे कहा कि वह कोई अन्य तलाब के बारे में नहीं जानता तो वह कैसे दूसरे तालाब में जा सकता है?

दोनो हंसो ने उससे कहा कि पास में एक बड़ा सा तालाब है जहां का पानी नहीं सूखता वह उसे वहां लेकर जा सकते हैं। हंसों की यह बातें सुनकर कछुआ राजी हो गया और वह उस तालाब में जाने के लिए तैयार हो गया।

कछुए को नए तालाब में ले जाने के लिए हंसो ने एक तरकीब खोज निकाली। वे एक लकड़ी लेकर आएंगे और उस लकड़ी के दोनों कोने को एक-एक हंस पकड़ेंगे। बीच में कछुआ लकड़ी को अपने मुंह से दबाकर पकड़ेगा। फिर वे उड़कर कछुए को तालाब में ले जाएंगे।

उड़ने से पहले हंसो ने उस कछुए से कहा कि उसे कुछ भी नहीं कहना है। अगर वह कुछ भी बोलेगा तो लकड़ी उससे छूट जाएगी और वह नीचे गिर जाएगा। उन्होंने कछुए से यह भी कहा कि नए तालाब में पहुंचकर वह जितना चाहे उतना बात कर सकता है।

दोनों हंसो ने उड़ना चालू किया और कछुआ लकड़ी को मुंह में दबाए हुए पकड़ा था। जब वे एक गांव के ऊपर से गुजर रहे थे तो नीचे गांव में मौजूद लोग ऐसा दृश्य देखकर अचंभित थे। गांव वालों ने ऐसा पहली बार देखा था की दो हंस मिलकर एक कछुए को कहीं ले जा रहे हो। ऐसे में गांव वाले मिलकर तालियां बजाने लगे। कछुआ उन सब को देखकर रुक नहीं पाया और बोला नीचे सारे लोग क्या कर रहे हैं? जैसे ही वह कछुआ यह बोला वह तुरंत ही नीचे गिरने लगा। वह

इतनी ऊंचाई से गिरा था कि जमीन में गिरते ही उसकी मौत हो गई। Panchatantra Stories in Hindi With Moral.

मोरल औफ़ द स्टोरी

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें बेवजह कुछ भी नहीं कहना चाहिए नहीं तो हम अपने लिए ही मुसीबत पैदा कर सकते हैं।

Read – Gautam Buddha Moral Stories in Hindi.